विविध गीत





गीतकार

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

विविध-गीत

[मैथिली नव-गीत]

गीतकार

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

प्रकाशक

उर्वशी प्रकाशन

मुसल्लहपुर, पटना-६

प्रकाशक

उर्वशी प्रकाशन

मुसल्लहपुर, पटना-६

प्रकाशन वर्ष—१९८८ (विद्यापति पर्व समारोहक अवसर पर)

पहिल खेप—११०० प्रति

मूल्य-२·५०

मुद्रक :

पूर्णिमा प्रिंटर्स

मुसल्लहपुर

पटना-६

कहबाक अछि जे……

मैथिली भाषा साहित्यक आधार भूमि थीक। एकर वैभवपूर्ण गीतिकाव्य परम्परा जे महाकवि विद्यापतिसँ अबाध ओ निरन्तर गतिएँ चलैत कवीश्वर चन्दा झा, कवि चूड़ामणि मधुप, उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' आदि वरिष्ठ गीतकार सभक लेखनीसँ निःसृत होइत कनिष्ठ मैथिली पुत्र प्रदीप ओ श्री रवीन्द्र धरि आबि तुलायल अछि। यदि गीतिकाव्यकेँ काछि-बाछि बाहर कऽ देल जाय तँ मैथिली भाषा साहित्येतिहासक महल एक जर्जर टटी घरसँ अतिरिक्त किछु नहि रहि सकत।

नेपालमे रचित मध्यकालक नाटक जकरा गौरवपूर्वक मैथिलीक नाटक कहि अपना साहित्यक इतिहासकेँ समृद्ध मानि रहल छी, ताहि नाटक सभमे गीति-काव्ये ओ सूत्र रहल अछि जाहि बलेँ ओकरा मैथिली नाटक कहबाक अर्हता प्राप्त अछि। यदि ओहि नाटक सभमे प्रयुक्त गीत सबकेँ नकारि देल जाय तँ कैक गोट नाटक पर मैथिलीक अधिकार रहि सकत ?

गीति-काव्यमे जे जीवनी शक्ति ओ स्थायित्व छैक तकर स्पष्ट दृष्टान्त महाकवि विद्यापतिए छथि जे शास्त्रीय लक्षणसँ युक्त कोनो महाकाव्यक प्रणयन नहि कयलनि तथापि महाकवि विशेषणसँ युक्त विगत छओ सय वर्षसँ आइ धरि पूजित होइत आबि रहल छथि। एहन एक नहि अनेक उदाहरण भेटि सकैछ।

गीति-काव्य स्वर-ताल-बद्ध होइत अछि जाहि कारणेँ 'सद्यः प्रीतिकरो रागः' उक्ति आइओ अपन चरितार्थता रखैत अछि। भारतीय संगीतक अपन विशिष्ट स्वाद छैके ताहूमे मिथिलाक संगीत परम्परा अपन स्वतन्त्र अस्मिता रखैत अछि। ओकर नकल करबाक अन्ध-प्रवृत्तिक कारणेँ स्वतन्त्र भारतमे जन्म ग्रहण कयनिहार आजुक युवक वर्गकेँ भारतीय संगीतक स्थान पर

पश्चिम देशक कुस्वादु 'फास्ट म्यूजिक' जकरा संगीतक बदला चोरक बेसी उपयुक्त होयत, सँह विशेष प्रिय भऽ रहल छनि, तथापि हालक प्रचलित भऽ जाओ, घृतक गरिमाकेँ कहिओ ने पाबि सकैत अछि। कंठदाह होयबे करत।

हम ने गीतकार छी ने संगीतज्ञ, तखन मनोविलासक हेतु किछु तुक जोड़ि लेल जे एकटा चनाजोर गरम वाला सेहो जोड़ि लैत तथाकथित अति प्रगतिशील आजुक कवि तुक्कड़ होयबासँ श्रेयस्कर होयबकेँ मानैत छथि। एहिमे ने कोनो कवित्व प्रकर्ष अछि ने भाव केवल नमूनाक रूपमे मिथिलामे गाओल जाइत महेशवाणी, नचारी, उदासी सन दस-पाँच गीतक संकलन मात्र भेटत।

हम स्वयं तँ एकटा पुस्तकाकार करबाक कोनो विचारो नहि छलहुँ; किन्तु श्री गोपीकान्त झा (उर्वशी प्रकाशन) आग्रह ओ उत्सा कयलनि, तदर्थं हमरा दिससँ सर्वथा धन्यवादार्ह छथि। अन्यथा ई सब कागते मे कतहु ओहिना फेका जाइत जेना विभिन्न आयोजनक अवसर विभिन्न आयोजक लोकनिक आग्रह पर गंडा-गाही नहि, सोऽहिमे स्वागत गीत फेका गेल। एहिमे जे दू गोट स्वागत गीत संकलित भऽ तकर श्रेय दौहित्र श्रीशंकर देव झा आ दौहित्री चि० कविता कुमारी जे कंठमे सुरक्षित रखने रहथि। हम एकरा संयोगे मानैत छी जे गीत-सिन्धुमे एहू एक बिन्दु केँ समाहित होयबाक सुयोग लागि गेल।

विद्यापति स्मृति पर्व १९८८;

श्री चन्द्रनाथ मिश्र

महेशवाणी

हे हर ! वरद ! बड़द चढ़ि आब पधारिअ हे
भेल सदाशिव ! हे हर दास उधारिअ हे ।

लोचन भरि-भरि आयल, मन भरिआयल हे
बिसरल सरल सुगम पथ, दृग पथरायल हे ।

आसन हम न लगाओल आश न त्यागल हे
केहन अभागल भाग, सुदिन तजि भागल हे ।

वेदन करब निवेदन वेद न जानिअ हे
अहँ हर ! हरब पराभव, मन अनुमानिअ हे ।

हमरा खल छलि राखल, चाखल आसव हे,
आ सब पाप पछाड़ि कहैछ गरासब हे ।

तारल अधम अनेक, किनार उतारल हे,
बारल ज्ञानक दीपक, परसि उबारल हे ।

अमर सुयश पद गाओल, अलख जगाओल हे,
रमल शिवक पद भरमल मन, सुख पाओल हे ।



महेशवाणी

आब न हर ! परतारिअ, भवसँ तारिअ हे,
दगधल मन बहटारिअ, बूझि न टारिअ हे।

हमर हृदय बड़ हलचल, हिअबिच हलचल हे,
थाकल पद दुहु निर्बल, सग न संवल हे।

रहलहुँ दुखक झमारल, विपतिक मारल हे;
जीवन जीबि बिगाड़ल, मन नहि गाड़ल हे।

अपनहि आगि पजारल, सब सुख जारल हे,
आदि न भेल सम्हारल, पौरुषहारल हे।

मनलहरल, हिअ हहरल, लोचन झहरल हे,
हर न हरल दुख देखल, खल हँस खलखल हे।

विषय विषहि मन बाँटल, बाट न सूझय हे,
विलटल लटल-बुड़ल मति, बात न बूझय हे।

मन-नभ दुख-धन छारल, पकड़ि पछाड़ल हे,
साहल सन्मति दूरहि, कुमति बेसाहल हे।

'अमर' सुयश पद गाओल, आश लगाओल हे,
शिवक शरण गहि सेवल, से बल पाओल हे।



नव नचारी

शिव ! ई बाना छोड़ू औ,
बेचू बूढ़ बड़द, लय ट्रैक्टर परती तोड़ू औ।

भारतमे गणतन्त्र भेल अछि बेटा अहिंक गणेश,
कार्त्तिकेय सेनापति छथि हे, अपने फोलू प्रेस
देशसँ नाता जोड़ू औ।

सक्रिय रहिकय राजनीतिमे जन-सम्पर्क बढ़ाउ,
अपने भाषण खूब करू, जनताकेँ काज अढ़ाउ,
पुरनका धारा मोड़ू औ।

भूत, प्रेत, वैताले भोटर, देत अहीकेँ भोट,
अस्सी नम्बर खद्धड़ पहिरु, फेकू फाड़ि लङ्गोट,
भाङ चिल्मी सब घोरू औ।

बसि कैलास कपै छी जाड़ेँ तकर प्रयोजन कोन ?
'एयरकण्डीशण्ड' भवनमे रहू लगा कय फोन
ज्ञान गुदरीकेँ गोड़ू औ।

सुलभ 'मरकरी' व्यर्थ चन्द्रमा छेकता तखन ललाट,
'अमर' लोक धरि पर करु शासन, बनथु भैरवे लाट
असुरकेर भण्डा फोड़ू औ।



लगनी-१

सुनबा लै करुण कथा ई
हरबा लै मनक व्यथा ई
नहि छै ककरो पलखति समय गमाओत रे की।

रहितहु ई हर्षक बेला
चारू दिस विपतिक मेला
देखि अधीर हृदय, के धीर धराओत रे की।

हृदये नहि निर्मल ककरो
सत्ये नहि संबल ककरो
केवल स्वप्नक मधु-संसार बसाओत रे की।

बन्धक छै' लोटा-थारी
आङ्गन में फटलै' साड़ी
की सीमा पर सोना अपन अड़ाओत रे की।

घर-घरमे बढ़तै' शिक्षा
भेटैं' ने केवल भिक्षा
बाँटि बेसाहक अन्न हकन्न कनाओत रे की।

इज्जति मर्यादा गेलै'
सतयुगकेर दादा एलै'
सत्य अहिंसा नाङड़ि अपन कटाओत रे की।



लगनी (अकाल बर्णन)

बिजुरी से यहुं चमकाबय,
उमड़ि घुमड़ि घन आबय,
घुरियाबय घर नीरद, नीर न बाँटय रे की।
लहरय घन कुन्तल माला,
नभ पर चढ़ि पावस बाला,
लय बाढ़नि सतबढ़ना सबकें झाँटय रे की।
परुको ने धान भेलै
मड़ुए परिधान भेलैं
एहूबेरुक दिनकर दिन भरि डाँटय रे की।
रोपल गब कानि रहल छै
चुरुओ ने पानि बचल छै
कापय कृषकक कोंढ़ कि धरती फाटय रे की।
भिठहामे ठाढ़ मकै छै
सेहो सब बाट तकै छै
ओस राति भरि भदबरिया सब चाटय रे की।
कहने छथि वाम विधाता,
रूसलि छथि धरती माता,
लोक अभागल कत दिन संकट काटय रे की।



लगनी

रानी बनलि हिन्दो;
तुलसी तकर सिर बिन्दी, (आ कि आहो रामा)
देश अभागल ताहो दिनसँ जागल रे की।
कहलनि ओ राम कथा जे,
सीताकेर मनक व्यथा जे.
एक-एक पद अनुपम रसमे पागल रे की।
पढ़ि-पढ़ि कय गौरव गाथा,
उन्नत अछि देशक माथा,
लोकक मनसँ संशय सबटा भागल रे की।
चलला वन दूनू भैया,
सङ्गमे श्री सीता मैया,
चित्रकूट पर भरतक मनुआँ लागल रे की।
रहला जा पञ्चवटी मे
लछुमन सङ्ग पर्णकुटी मे
हरलक सीता रावण परम अभागल रे की।
सजलनि ओ वानर दलकें,
मारल जा निशिचर खलकें,
मारि तीरसँ दानव-दलकें दागल रे की।
भगत विभीषण राजा,
लंकामे बाजल बाजा,
सुर-नर-किन्नर सभहिक हृदय जुड़ायल रे की।

घुरला अवध दिस राम,
पुलकित मन गामक गाम,
अवधक लोकक हृदय अवधिपर टाकल रे की।
जखने अवतरला तुलसी,
हुलसित मन हुलसथि हुलसी,
जर्जर भारत भूमिक अन्तर लागल रे की।
तुलसी जयन्ती वेला,
लागल मन भावक मेला,
चरण-कमल मे अमर अचल मति माङल रे की।



लोक गीत

आयल पावनि फगुआ,
हम नहि बनबै' अगुआ,
लगुआ-भगुआ संग रंगमे मनुआँ तीतल रे।
बहि रहलै' अछि पछबा
आयल मास अलछबा
गछबा कऽ धरतीसँ पतझड़ ज्राड़ो बीतल रे।
गामक करकट कूड़ा,
लऽ कऽ करबै' धूड़ा,
पूरा कऽ मलि, मँल छोड़ाओत ई जगतीलल रे।
पू-पकमानक ढेरी,
पयबामे की देरी
फेरी दऽ दऽ पूर पसेरी खा जग जीतल रे।
ने दाही, ने जरती,
ने जोतल, ने परती
धरती राग बसन्त-सुरभिसँ शीतल हीतल रे।
मामी लगमे मामा
आइ बनल छथि गामा
वामा दहिना के तकँछ, अपने मे रीतल रे।



लोक गीत

बाँसक खुट्टा पर जकर बड़ेरी टेकल छै'
ताही फूसक घरपर ई चिनगी फेकल छै'
धधकैत कते लगतै देरी देखत दुनिआ
जे ओलतिक धधरा कोना बड़ेरी ठेकल छै'।

चंतक पछबा केर घुक्कड़ तै पर हौंकै छै'
ई हाल देखि कय प्राण ककर नहि चौंकै' छै'
सुरखुरी उठल छै' ओहिना प्राण अवग्रहमे
तै पर मेरिचाइक दओंक झोंकिकय छौंकै' छै'
अनके घर डाहि पजारि सभक
स्वार्थक ई रोटी सेकल छै'

देलकै' के देशक सब इनारमे भाङ घोरि ?
नैतिकताकेर हत्याकय, सत्यक टाङ तोड़ि ?
देलकै' समाजके' भुस्सा थरि बैसा, तैं' ने
अपनो समाङके' रहलै अपन समाङ छोड़ि,
दुर्बुद्धिक द्वार खुजल सबतरि
सद्बुद्धिक बाटे छेकल छै'।



लोक गीत

अयलै' समय ई कठिन दुरजरुआ
बचतै' न एहि बेर लाज,
हे बाबा ! बैसल झखै' छै' समाज।

कमलाकें बन्हलहुं आ बन्हलहुं कोसी,
अपने भिड़लहुं आ भिड़ला परोसी;
दोषी विधाता बनौने तदपि छथि
भीतरसँ तै पर नाराज,
हे बाबा ! बैसल झखै' छै' समाज।

बिजलीक खम्भा गड़यलै' तरौनी,
बड़काटा जक्शन बनौलहुं बरौनी;
औंनी पथारी दऽ गंगोकें बान्हल
पड़ले रहल तैयो काज,
हे बाबा ! बैसल झखै' छै' समाज।

घर-घर सिखौलहुं जा लूरि घरैया,
फोलि कारखाना करौलहुं ढरैया,
तैयो मड़ैया मड़ैए पड़ल अछि
अयलहुं कथूसँ ने बाज,
हे बाबा ! बैसल झखै' छै' समाज।

कखनहु कऽ जरिते उगै' छथि दिनकर;
तपबथि ओो धरती आा धधकय चराचर;
औधर हरित चर-चाँचर सुखायल
करतैं' की कोसी बराज,
हे बाबा ! बैसल झखैं' छैं' समाज ।

कखनहु कऽ उमड़ै' सघन घन करिया,
उघने फिरै' पवन सन भरिया,
सरिया कऽ चाहै' डुबादी ई दुनिञा,
करतैं' तखन की स्वराज,
हे बाबा ! बैसल झखैं' छैं' समाज ।

बहुतो पड़ल जे करत सरकारे,
बहुतोक मनमे भरल छैं' विकारे,
कोनो प्रकारे ने पारे उतारैं'
ने बीचे मे बूड़ै' जहाज,
हे बाबा ! बैसल झखैं' छैं' समाज ।



नृत्य गीत

झम झम झमकै ई कारी बदरिया
हम रोपो छप-छप-छप धान हो बाबा।
चम चम चम चमकै सोहागिन बिजुरिया
गम गम गम गमकै परान हो बाबा हम.......।

अदरा बरसि गेल भरि भरि मौनी,
पुरबा लगौलक फेरो सुखौनी
उमड़ल सड़े सड़ आ सटकल सड़े सड़
कोसी ओ कमला-बलान, हो बाबा हम.......।

तोरो चढ़यबह हम बेलपतिया,
माङ पिअयबह पिसि भरि पथिया,
हथियामे तों बाबा झपसी लगा दैह
बरखा हो अरिया नँघान, हो बाबा हम.......।

बम बम बम कहि कहिकय गाल बजबयह,
अपनो नाचब, सङमे तोरो नचयबह,
तोहें पशुपति छह पशु केर मालिक
हमहू छी छेहा किसान, हो बाबा हम.......



कखनहु कऽ जरिते उगै' छथि दिनकर;
तपबथि ओ धरती आ धधकय चराचर;
आँचर हरित चर-चाँचर सुखायल
करतै' की कोसी बराज,
हे बाबा ! बैसल झखै' छै' समाज।

कखनहु कऽ उमड़ै' सघन घन करिया,
उघने फिरै' पवन सन भरिया,
सरिया कऽ चाहै' डुबादी ई दुनिआ,
करतै' तखन की स्वराज,
हे बाबा ! बैसल झखै' छै' समाज।

बहुतो पड़ल जे करत सरकारे,
बहुतोक मनमे भरल छै' विकारे,
कोनो प्रकारे ने पारे उतारै'
ने बीचे मे बूड़ै' जहाज,
हे बाबा ! बैसल झखै' छै' समाज।



नृत्य गीत

झम झम झमकै ई कारी बदरिया
हम रोपो छप-छप-छप धान हो बाबा।
चम चम चम चमकै सोहागिन बिजुरिया
गम गम गम गमकै परान हो बाबा हम……।

अदरा बरसि गेल भरि भरि मौनी,
पुरबा लगौलक फेरो सुखौनी
उमड़ल सड़े सड़ आ सटकल सड़े सड़
कोसी ओ कमला-बलान, हो बाबा हम……।

तोरो चढ़यबह हम बेलपतिया,
भाङ पिअयबह पिसि भरि पथिया,
हथियामे तों बाबा झपसी लगा दैह
बरखा हो अरिया नँघान, हो बाबा हम……।

बम बम बम कहि कहिकय गाल बजबयह,
अपनो नाचब, सङमे तोरो नचयबह,
तोहें पशुपति छह पशु केर मालिक
हमहू छी छेहा किसान, हो बाबा हम……।



श्रृंगार गीत

न फोलू सखि कजरायल नयन
लजयती ई पावस रानी
लजयती ई पावस रानी।

ई थिकीह ऋतुराजक रानी, अहाँ हमर जीवन धान,
हिनक मिलन छनि छनिक अहँक सङ हमर मनक चिरबन्धन,
नुकौने रहू कनक घट, बिना पिआसहु मरता विज्ञानी,
लजयती ई पावस रानी।

चंचल पग अगुआय न पग पर बाजि उठत मंजीर,
मन्मथ मन मथि मथि पछतयता, पड़तनि कर जिंजीर,
अधरमे मूनि धरू मुसकान मुरुछि कय खसता सब ज्ञानी,
लजयती ई पावसरानी।

भृकुटि कमान न तानिअ सजनी छूटि पड़य नहि तीर,
मुइनिहार तँ मरत, जियत जे सँह कहत बेपीर,
थीर नहि रहि सकता सुरराज, पजरली डाहें इन्द्राणी,
लजयती ई पावस रानी।

धन-कुन्तल मुख-चन्द्रक ऊपर आबि जखन छितराय,
पीतवसन तन झाँपल देवय चपला चमकि पड़ाय,
मुदा सखि फोलू हृदयक मंच कि नाचब हम दूनू प्राणी,
लजयती ई पावस रानी।



स्वागत गीत

कनय सँ आनब नव उपकरण
करब जेहिसँ अतिथिक सत्कार,
स्वागतक साधन नहि किछु आन
छाड़ि कय हृदयक नव उद्गार।

अर्घ्यंहित भरल नयन हर्षाश्रु
भावहिक अक्षत चन्दन धूप,
निवेदित वाचनिके नैवेद्य
करब करु जाकय से स्वीकार।

तर्क-जल आनि विवेकक माटि–
सानिकय कयल जकर निर्माण,
बुद्धिहिक देल बाँटिकय टेम
जाहिमे भरलहुँ स्नेह अपार।

जरय से छोट छीन सन दीप
जकर द्युति हृदय-कुहरमे पैसि,
जगाबय अगजगमे आलोक
हरय अज्ञानक निविड़ अन्हार।

भावना पुष्पांजलिक स्वरूप
उपस्थित कय सकलहुँ श्रीमान
क्षमब पग पग पर भेल अभाव
थिकहुँ जे अपने करुणागार।



स्वागत गीत

करब कोन विधि हम अभिनन्दन ।
हृदय-थारमे उपहृत अछि ई केवल भावक अक्षत-चन्दन ।
ई लघु दीपक जरइत अनुखन,
दीपित करय सभक घर आङन,
महिमा-मण्डित पाहुन सभहिक
स्नेह दान लै भेल आगमन,
विह्वला मन चाहय किछु गाबी, उमड़य भाव, किन्तु मुख छन्द न ।
हृदय-थारमे उपहृत कयलहुँ केवल भावक अक्षत-चन्दन ॥
सदय हृदय हो, मन निर्भय हो,
जीवन-पथपर रथ गतिमय हो,
बनल मनोबल रहय निरन्तर
मैथिलीक मुख तेजोमय हो
येह कामना राखि हृदयमे सरस्वतीक करी पद वन्दन ।
हृदय-थारमे भरि-भरि आनल केवल भावक अक्षत-चन्दन ॥
ई विदेह जनपद विपन्न अछि,
कोटि कोटि जन से निरन्न अछि,
भाषा-भूषा संस्कृति सब किछु
आई भेल संकटापन्न अछि
नगर-नगर, रन-बन भटकै छथि लिखिओ पढ़ि वैदेही नन्दन ।
हृदय-थारमे करी समर्पित केवल भावक अक्षत-चन्दन ॥



गजल

पसरि रहल धुआँ कतहु आगि जरै'ए
धधकि उठत ज्वाल से संकेत करै'ए

बहैत छै' बिहाड़ि विपिन कापि उठै' छै'
अपनेमे घर्षणसँ आगि उठै' छै'
सकल जीव-जन्तुमे पड़ाहि लगै' छै'
सिंह ओ सियारमे ने भेद रहै' छै'
हाथी मद-मत्त सेहो पाकि मरै'ए
पसरि रहल धुआँ कतहु आगि जरै'ए

कन्द-मूल सेहो सुड्डाह होइत छै'
ज्वालामे तेहन विकट दाह होइत छै'
चतरल बड़-पाकड़ि ओ पीपर केर गाछ
छनभरिमे जरि-जरि खकस्याह होइत छै'

कते दिने तखन बनक घाव भरै'ए
पसरि रहल धुआँ कतहु आगि जरै'ए

दावा नल एहिना उत्पन्न होइत छै'
अकठक सङ साँखुओ विपन्न होइत छै'
धाहीसँ धरती से खिन्न होइत छै'
जा धरि वन जरिकय सम्पन्न होइत छै'

गगनो केर छातीपर टेम बरै'ए
पसरि रहल धुआँ कतहु आगि जरै'ए।



डहकन

वरके देखियनु गे दाई,
दूध बेचिकय माय, पूतके देलनि केहन लटाई।

गामक लोक केहन अल्हड़ सब कयलक रोक न छेक,
दुध्रकट्टू बौआक देहपर रहतनि मासु कतेक।

पोसयमे जे खर्चा पड़लनि सेहो कयल असूल,
माय छथिन थल कमल सनक आ बाप धुथूरक फूल।

सुन्दरतामे मौसी कटथिन कौआ धरिकेर कान,
घर बिआहि तैयो लय गेलथिन मौसा हिनक अकान।

सखी मालती-लता हमर आ वर छथि टेढ़ बबूर,
चिन्हिए ने सकथिन सौरभ, तँ करती कोना सबूर।

लटपट टाङ, देह छनि लकलक, फकफक छोड़थि साँस
पोसू हिनका खोआ पियाकऽ राखू बारह मास।

बहिन बेचि ई फोट फाट कऽ अयला करय बिआह,
गोर नार ऊपर सँ भीतर वंशे छिनक सियाह।

[जयबाबा वैद्यनाथ फिल्ममे]



बिडम्बना गीत

रंग जमुनिआ, मुँह टुनमुनिआ,
देखलहुँ जे आँखि निड़ारि कनिआ,
सत्तो कहै' छी अहाँ जे अयलहुँ
अङनामे अयलै' बिहाड़ि कनिआ।
धूआँ सन मुँह सतत बनौने,
सात पुरुष धरि नाम घिनौने,
अहिंक दयासँ घर-दुआरि सब देलक दाँत चियारि कनिआ।
छोटका बुचन, बड़का भैया,
एके गाछक दू खपलोइया,
अहाँ सुलच्छनि चाहि रहल छी, तकरे दी पहिने ओदाड़ि कनिआ;
भैयाकेँ पढ़ि नोन खोऔलहुँ,
फुसिए फटके नेप चुऔलहुँ,
सोझरायल परिवार अपन छल तकरे देलहुँ बिगाड़ि कनिआ।
हम सब बुझलहुँ लिखलि-पढ़लि छी,
मुदा अहाँ तँ चानि चढ़लि छी,
बोल ओल सन सन बाजी, क्यौ नेब्रो सकय नहि गारि कनिआ।
नाक टोर फरकाबी दून,
कृपा करू किछु हमरो सून,
माय-बाप की पाठ पढ़ौलनि ? अयलहुँ की मनमे नेयारि कनिआ।
पुरुष पछाड़नि थिकहुँ की बहुरिया,
सौंतू साड़ी, गहना गुरिया,
कोंढ़ कपै'ए सत्तो कहै' छी ताकू न आँखि गुड़ारि कनिआ।



युगल गीत

कहू कोइली कुहुकि की बाजय
विजन वन मे इतरा ?
सुनू कोइली कुहुकि रस बोरय कलश उमड़ा उमड़ा।
ई माकन्दक सौरभ, रभसल
पवन चलय, वन समसल समसल
तें स्वर्ण मंजरी केर करय निशि भरि पहरा।
मातल आइ वसन्तक आङ्न
कलो दैत अछि रस आमंत्रण
देखू तें जूही लता फुलायल अछि छितरा।

२

कहू गुनगुन गुन की सब गाबय कली लग जा भम्हरा।
सुनू गुनगुन मे गून चलाबय मतल मद मे भम्हरा।
छिलकि रहल मधु कलश भरल ई
वन उपवन अछि तरल तरल ई
लखि आकुल तबधल प्रान, दान किछु दी हमरा।
सुनू गुन गुन मे गून चलाबय मतल मद मे भम्हरा।
लागत किरन कली मुसकायत
मधुकर केर मन प्राण जुड़ायत
झुमि रहल लता-तरू हिलल मिलल नितरा नितरा।
ई दखिन पवन झुमबय अपनहु लहरा लहरा।
कारी अलि, कोइली से कारी
कारी वृन्दावनक बिहारी
चलू नाची मगन मन अपन अपन सुधि-बुधि बिसरा।



उदासी

भरल-पुरल घर मधि छल हल चल
मचल एतय दिन राति।
रंग-विरंगक पाहुनके घर
अनलहुँ हम अरियाति।
भेटल ई सुख, से छल सरिपहुँ
अरजल पहिलुक पून।
उसरल से सब पसरल चहुँदिशि
दुख, लगइछ मन सून।
सुमिरन करइत बीतत जीवन
ई दिन पलटि न आब।
केवल एक बनल रहि जायत
अतिथिक मधुर प्रभाव।
करिअ निवेदन सुनब सुनब सुहृद् जन
कष्ट धरब नहि कान।
अपन थिकहुँ से गुनि मन मानब
दुइतन एक परान।



उर्वशी प्रकाशन

(प्रकाशित पुस्तक सूचो)



१. कथा कहिनी	......	५·००
२. चक्रव्यूह (कविता संग्रह)	......	५·००
३. त्रिकोण (कथा संग्रह)	......	५·००
४. मैथिली संस्कार गीत	......	१०·००
५. मधुश्रावणी व्रत कथा	......	५·००
६. मैथिली लोक गीत	......	५·००
७. तोड़ा अड़ना मे	......	५·००
८· अछिजल	......	३·००
९. विविध गीत	......	२·५०
१०· विद्यापतिक गीत	......	५·००
११· विद्यापतिक गीत (कच्ची)	......	१·२५
१२. मैथिली चटनी	......	१·२५
१३. मैथिली सोहर	......	१·२५
१४. तर्पण	......	१·००

